जीवन के नूपुर

वो हँसी झुटीले सपनों पट

नेहा नूपुर

जीवन के नूपुर
वो हँसी सुरीले सपनों पर

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN:978-81-19927-78-4

Price: ₹ 205.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher

Printed in India

जीवन के नूपुर

वो हँसी सुरीले सपनों पर...

'नेहा नूपुर'

मेरी लेखनी से.....

कभी–कभी जब पुराने सपनों की तरफ पलट के देखते हैं तो ये कुछ–कुछ उन पत्तियों जैसे दिखते हैं जो सूख चले हैं, फिर भी अपनी शाख नहीं छोड़ी। सूखे पत्ते अपने बदले हुए रंग के साथ एहसास दिलाने लगते हैं कि अब और कितने दिन रहना है मुझे, डाल संग अब और कितना साथ है।

बस यूँ हीं तो हैं जिन्दगी संग सपने भी। ये सपने भी तो एहसास कराते रहते हैं वक्त के साथ अपने बदले तेवर में कि अब और कितने दिन लोगे मुझे हकीकत बनाने में, कितना साथ होगा मेरा उम्मीदों संग।

कई बार हम वक्त पर समझ जाते हैं पत्तियों और सपनों के इस बदले रंग का गूढ़ अर्थ और कई बार बस यूँ ही छोड़ देते हैं वक्त के सहारे। फिर या तो डालियाँ इन सपनों का बोझ सहन न कर पाते हुए दरख्तों से अलग हो जाती हैं या फिर ये सपने उम्मीद की बोझ लेकर जिन्दगी की डाली से देखते ही देखते उखड़ने लग जाते हैं, बस वैसे ही... सूखी पत्तियों की तरह।

एक वक्त ऐसा भी आता है जब 'सपने' याद तो आते हैं लेकिन उनके हासिल न होने का कोई पछतावा नहीं होता। नये सपनों का असर हावी होता जाता है या पुराने की तलब खत्म होती जाती है, वजह जो भी हो, जिन्दगी आगे बढ़ती है एक नये रूप में और सज जाती है हँसने–मुस्कुराने की दूसरी वजहों से, जैसे ये दरख़्त सूखे

पत्तों के उजड़ जाने के बाद सज जाते हैं नये हरे–भरे, खिलखिलाते पत्तों से और हम कहते हैं –

''वो हँसी सुरीले सपनों पर''

जिन्दगी और सपने सजते हैं अलग–अलग भावों से जिसमें जिज्ञासा है, उम्मीदें हैं, प्रेम है, विरह है, यादें हैं, हास्य है, समर्पण है, डर और विरोध भी हैं।

जिन्दगी के इन्ही भावों को मैंने ''नूपुर'' का नाम दिया है। इस गजल और कविता संग्रह को अपनी पहली पुस्तक के रूप में ''जीवन के नूपुर'' पाठकों को समर्पित करती हूँ।

उन सभी को कोटिशः धन्यवाद जिन्होंने इन कविताओं को मूर्त रूप प्रदान करने में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मेरी मदद की। दादा–दादी का आभार, उचित परिवेश प्रदान करने हेतु। माँ–पिता जी का आभार, उनके समर्पित परवरिश व बहुमूल्य मार्गदर्शन हेतु। चाचा–चाची का आभार, अनवरत अपना साथ व आशीर्वाद बनाए रखने के लिए। मेरी बहनों प्रीति पुतुल, मेधा माधवी, सारिका सलोनी का शुक्रिया, इन कविताओं की पहली पाठक व श्रोता बन उत्साहवर्द्धन करने के लिए। जिन्दगी के हर मोड़ पर मार्गदर्शक बने श्री अवध कृष्ण शर्मा, श्री विंकटेश राय एवं श्री पी.एन.मौआर और अन्य का आभार। मेरे तमाम मित्रों का शुक्रिया जो हर कदम मेरी ताकत बने रहे। मैं आभार प्रकट करना नहीं भूलूँगी मेरे ऑनलाइन फॉलोवर्स का भी, जिनका मेरी लेखनी को संवेदनशील बनाने में बड़ा योगदान रहा है। अंततः प्रकाशन टीम को धन्यवाद, जो उन्होंने इस पुस्तक पर अपना भरोसा जताया।

पुस्तक में हुई भूल–चूक के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ, साथ ही उम्मीद करती हूँ आपका स्नेह मिलेगा। आपके सुझावों द्वारा अनुगृहीत होने की तमन्ना लिए।

– **''नेहा नूपुर''**

एक परिचय

बिहार की राजधानी पटना में 21 अक्टूबर 1992 को संध्याकाल में जन्मी ''श्री शशिभूषण मिश्र'' और ''श्रीमती वीणा मिश्र'' की पुत्री ''नेहा नूपुर'' की रूचि बचपन से ही संगीत एवं तकनीकी शिक्षा में रही है। घर की चार पुत्रियों में दूसरी ''नूपुर'' की रूचियाँ हमेशा से ही कुछ अलग करने में रही।

बचपन कैमूर की पहाड़ियों के प्राकृतिक छटाओं के बीच भभुआ में गुजरा। यहीं बाल विकास पब्लिक स्कूल तथा टैगोर एकेडमी में प्राथमिक शिक्षा हुई। दादा जी डॉ. निर्मल कुमार मिश्र, दादी जी श्रीमती शकुन्तला देवी, चाचा श्री शैलेश कुमार मिश्र, चाची श्रीमती रिंकी मिश्र और बहनें प्रीति पुतुल, मेधा माधवी व सारिका सलोनी के संग शाकद्विपीय संयुक्त ब्राह्मण परिवार में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

2002 में दादा जी के सेवानिवृति के पश्चात् परिवार का बसेरा आरा में ''निर्मल निलय'' बना। यहाँ आगे की शिक्षा आर्यन रेसिडेंसियल पब्लिक स्कूल में हुई। यहीं से विद्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों में शिरकत करते हुए कला की गंभीरता से परिचित हुई और परिचित हुई कविता की दुनिया से भी। उच्च शिक्षा हेतु वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय के अंतर्गत हर प्रसाद दास जैन महाविद्यालय में आने के बाद कविताओं में तुकबंदी के साथ–साथ भावनाएँ भी शामिल होने लगीं थी। पुनः इसी

महाविद्यालय से बी.एस.सी.(आई.टी.) में नामांकन के बाद जिन्दगी की सीखों को शायरी के रूप में व्यक्त करना आदत सी होती गयी। महाविद्यालय में भी अलग–अलग प्रतियोगिताओं में सक्रिय भूमिका निभाती रही। इसी बीच विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित रचनाओं ने इन्हें लेखन के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाने की प्रेरणा दी।

2013 से उदवंतनगर प्रखंड में एक शिक्षिका के रूप में कार्यरत रहते हुए अपने शौक को अब इस पुस्तक के जरिये मुकम्मल राह देने की कोशिश कर रही हैं। छोटी सी उम्र में ज्यादा हासिल करने वाली कवयित्री ने अपनी ख्वाहिशों को कुछ यूँ शब्द दिया है –

''मुझे मिलने से पहले मेरे गीत गुनगुनाए कोई,
मैं चाहती हूँ जिन्दगी में ऐसा भी दिन आए कोई''

– ''डॉ. कृष्णानंद मिश्र''

प्राग्वचन

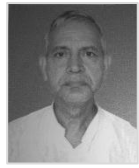

काव्योद्भव के हेतु का विवेचन करते हुए पण्डितराज जगन्नाथ ने प्रतिभा को ही काव्य का मूल या बीज हेतु माना है –

''तस्य च कारणं कविगता केवला प्रतिभा''

सुश्री ''नेहा नूपुर'' के कविता संकलन ''जीवन के नूपुर'' की कविताओं का रसास्वादन जैसे–जैसे मैंने आरंभ किया, वैसे–वैसे मेरी धारणा पण्डितराज जगन्नाथ के मत की संपुष्टि में दृढ़ से दृढ़तर होती गई कि कविता की उत्पत्ति का मूल कारण शक्ति अर्थात् प्रतिभा ही है, लोकशास्त्र, काव्य आदि का अवेक्षण एवं अभ्यास उसके सहायक मात्र हैं। सरल एवं सरस शब्दावली में प्रेम–तत्व की ऐसी गूढ़ एवं सहज काव्यात्मक अभिव्यंजना में ''नेहा नूपुर'' के गहन विद्या–अध्ययन, अभ्यास एवं वय का योग उतना परिलक्षित नहीं होता जितना कि उसकी नैसर्गिक प्रतिभा एवं जन्मान्तरागत संस्कारों का। सुश्री नूपुर की कविताओं में प्रबल भावना का सहज उद्रेक हुआ है। नूपुर की कविताएँ पाश्चात्य विचारक वर्ड्सवर्थ के उद्गार का अनायास स्मरण करा देती हैं –

''Poetry is the spontaneous overflow
of powerful feelings.''

कविता–संकलन ''जीवन के नूपुर'' की अधिकांश कविताओं का मूल स्वर है – हृदय का रतिभाव और यह

रतिभाव नयनों का नयनों से गोपनप्रिय संभाषण के माध्यम से अकस्मात् और हठात् कैसे उद्‌बुद्ध हो जाता है, इसके तथ्य की मर्मस्पर्शी अभिव्यंजना द्रष्टव्य है –

''दो पल की जिन्दगानी,
हमने किसी की न मानी''

''एक नजर नयनों की, एक शरारत लबों की,
इत्ती सी हरकत और शुरु हो गई कहानी''

प्यार की मौन आहट पर नूपुर–ध्वनि की मधुर झंकार के साथ नृत्य करने की प्रबल लालसा एवं कवयित्री के हृदय के आवेगों एवं उमंग की उत्थाान ऊर्मियों की छटा कितनी मनोहारिणी है –

''मैं नूपुर हूँ, मैं तो साथी नाचूँगी,
अधर चुप रह लें चाहे, हर आहट पर बाजूँगी''

नर्त्तन के इस महोत्सव में प्रेमी हृदय स्वयं नूपुर बन जाता है, नूपुर से तादात्म्य सम्बन्ध स्थापित कर लेने पर न तो उसके चरण शिथिल होते हैं और न ही नयन, प्रत्युत उसके अनुरागी नयनों में प्रतिपल रमणीय, स्वप्निल एवं सुरीले सपने सजते रहते हैं –

''दो पल को मेरे नैन थके ना,
हर पल मैं सपने साजूँगी!
मैं नूपुर हूँ, मैं तो साथी नाचूँगी''

'कुछ कहती हैं मेरी आँखें' कविता में प्रेम के क्षेत्र में आँखों की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण होती है, इसका हृदय–विदारक वर्णन प्रस्तुत किया गया है। आँखें ख़ामोश

रहकर भी दिल के हर हाल एवं राज का पर्दाफाश कर देती हैं –

''मचलती हैं, भटकती हैं,
फिर खुद ही सम्हलती हैं मेरी आँखें!
हर शब बड़े सलीके से ढलती हैं मेरी आँखें''

''कभी-कभी चुपके से कहता है वो 'नूपुर'
खामोश हैं मगर कुछ कहती हैं मेरी आँखें''

प्रेमास्पद के चेहरे पर हल्की शिकन देखकर अपना सर्वस्व एवं सुख–सार निछावर करते समय नायिका हारती नहीं और हार भी जाती है, प्रेम की इस विचित्र एवं विरोधाभाषपूर्ण दशा का हृदयग्राही वर्णन ध्यातव्य है –

''तेरी शिकस्त पे अपना सब वार भी गई,
मैं हारी भी नहीं, मैं हार भी गई!
निगाह ने तेरी आकर मुझको छुआ तक नहीं
नज़र मगर जिगर के पार भी गई''

प्रियतम से अलग रहकर भी विरहिणी दूर नहीं रह सकती। जुदाई की तपन बेला में भी संयोग–काल की मधुर स्मृति उसकी साँसों के सरस हिंडोरे पर झूलती रहती है –

''पलकों पे सावन हो जुदाई का जब 'नूपुर'
मन में प्यारा सा मुखड़ा मुस्काए कोई''

कविता–संकलन के केन्द्रीय भाव से थोड़ा अलग हटकर 'औरतें' कविता में स्त्री को नए उपमानों से गरिमामंडित कर एवं उसकी निस्सीमता का गौरवपूर्ण व्याखान कर

अपनी नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा का अपूर्व परिचय कवयित्री ने प्रदान किया है –

''ब्रह्मांड की विस्तृत मेखला सी ये,
क्षितिज से दूर ये कोई आकाशगंगा हैं!
ढली हैं कब ये एक साँचे में कह दो,
इनके होने से पावन स्थल, नभ औ गंगा हैं''

कतिपय कविताओं में कवयित्री ने वर्तमान राजनीति के छल–प्रपंच का वर्णन कर समसामयिकता एवं प्रासंगिकता से अपने को संबद्ध एवं अविच्छिन्न रूप में भी प्रस्तुत किया है –

''सियासत में कौवे चलते चाल हँसों वाली,
गली-मुहल्ले-नुक्कड़ पर बैठक सरपंचों वाली!
चुनावी मौसम में भईया अक्सर ऐसा होता है,
होता है भाई, होता है''

वर्तमान समाज में व्याप्त स्वार्थपरता, कुटिलता आदि भी कवयित्री को बेचैन कर देती है –

''खुदगर्जी का भूखा, कोई गरीबी का पाबंद,
अब इंसानों में इंसानियत की जात कुछ भी नहीं''

कविता–संकलन में दार्शनिक तत्त्व भी विद्यमान है, यह संसार स्वप्नवत है, यहाँ अपना कोई नहीं है। ऐसे विचारों की अभिव्यक्ति कर शाश्वत सत्य का उद्घोष भी किया गया है –

''क्यों बेतहाशा हम सपनों को चाहते हैं,
न लोग अपने, न सोच अपनी, न फैसला अपना''

कवयित्री ने अन्तस्थल में अपने परिवेश का संस्कार रचा–बसा है। बिहार की मिट्टी की खुशबू, प्रान्तीय बोली एवं व्यवहार से उसका सम्बन्ध अटूट है, इसकी झलक भी कविता–संकलन में संकलित एक भोजपुरी कविता में मिलती है –

''गाँव घर से मिलल संस्कार कहाँ जाई,
मनवा में बसल ई बिहार कहाँ जाई''

मेरी शुभकामना है कि कवयित्री ''सुश्री नूपुर'' का परिवेश सुरभित एवं मंगलमय बना रहे और वह अपने काव्य–जीवन के उच्च शिखर पर विराजमान हो जाए।

डॉ. योगेन्द्र पाठक
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
संकायाध्यक्ष, मानविकी

जीवन के नूपुर

वो हँसी घुटीले सपनों पट

"जिन्दगी और सपने सजते हैं अलग–अलग भावों से जिसमें जिज्ञासा है, उम्मीदें हैं, प्रेम है, विरह है, यादें हैं, हास्य है, समर्पण है, डर और विरोध भी है।

जिन्दगी के इन्हीं भावों को मैंने 'नूपुर' का नाम दिया है। इस गजल और कविता संग्रह को अपनी पहली पुस्तक के रूप में 'जीवन के नूपुर' पाठकों को सौंपती हूँ।"

लेखक से सम्पर्क हेतुः

नेहा नूपुर

teennupur@gmail.com

शिक्षक, ब्लॉगर व युवा कवयित्री

पैतृक गाँव– पथार, पोस्ट– गड़हनी, जिला– भोजपुर, "आरा"

FSP

FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE

Flipkart GET IT ON Google Play

amazon amazonkindle

EBOOK AVAILABLE

ISBN 978-81-19927-78-4

9 788119 927784